सिमोन बोलिवर

जैन कैथलीन, चित्र : टॉम, हिंदी : विदूषक

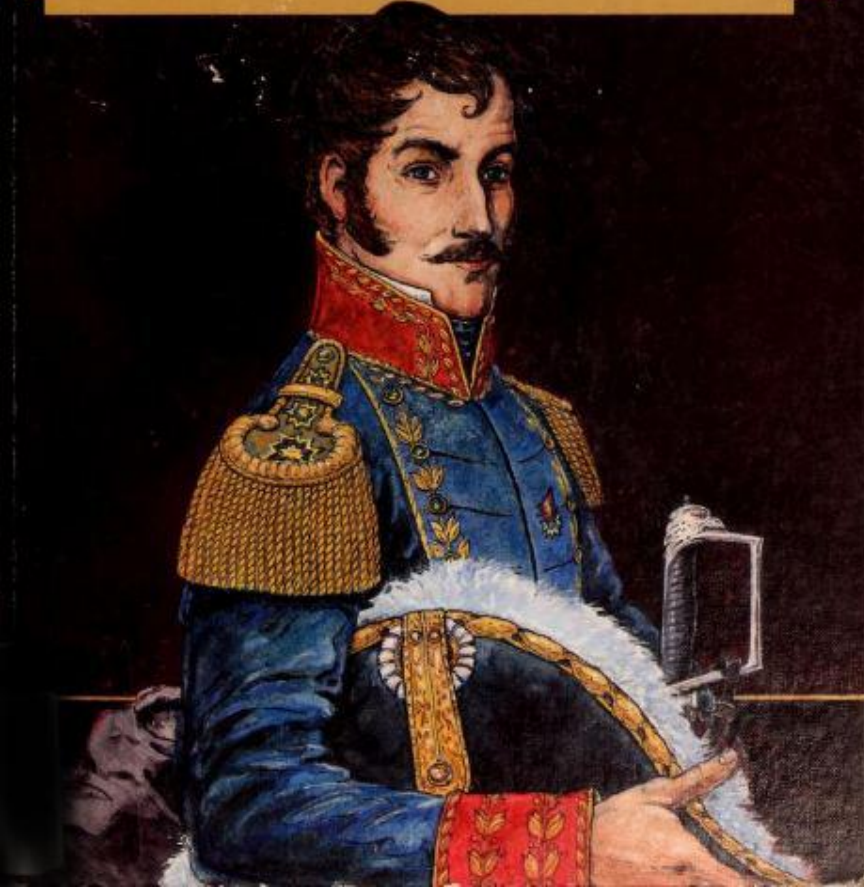

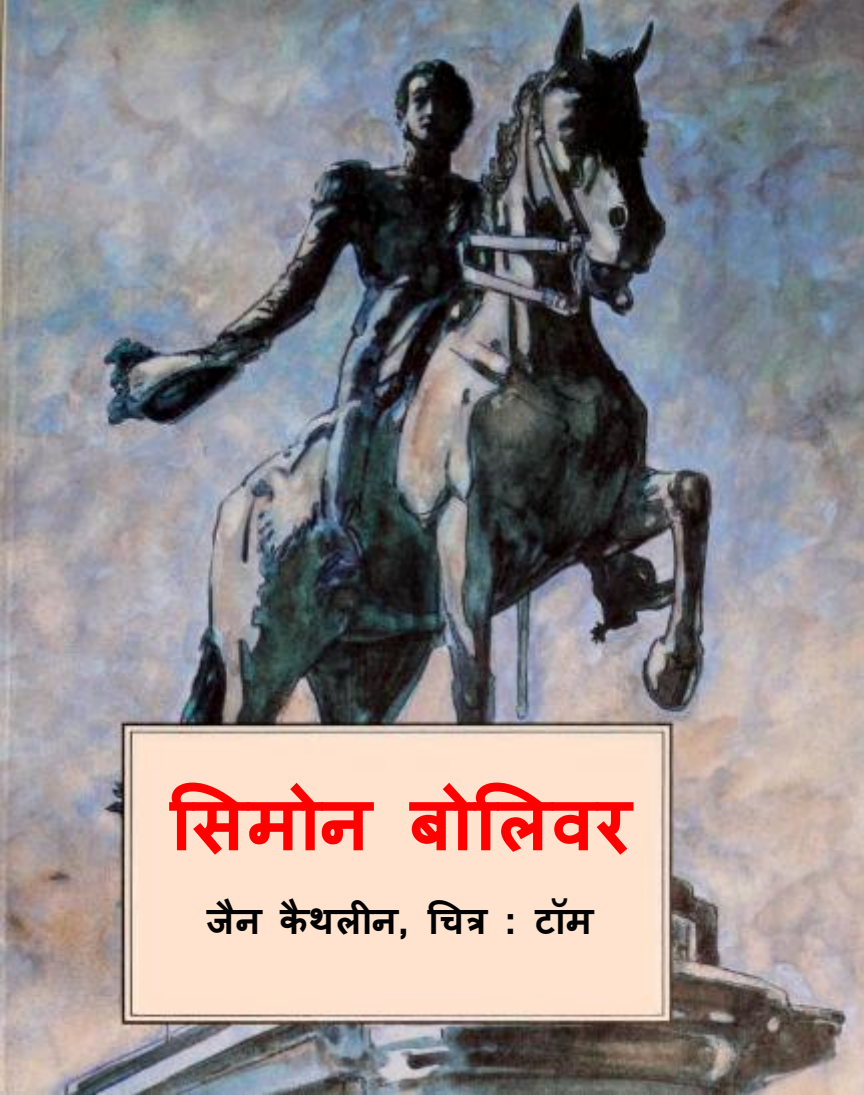

सिमोन बोलिवर

जैन कैथलीन, चित्र : टॉम

सिमोन बोलिवर का जन्म 1783 में एक ऐसे देश में हुआ जहाँ के रईस लोग बहुत अमीर थे और गरीबों के हालात बेहद दयनीय थी.

वेनेज़ुएला में सिमोन बोलिवर का परिवार बहुत धनी और वो स्पेनिश मूल का था.

नौ साल की उम्र में सिमोन के माता-पिता, दोनों का देहांत हो चुका था. सिमोन के चाचा ने उसकी पढ़ाई के लिए कई टीचर लगाए. पर सिमोन को पढ़ाना कोई आसान काम नहीं था. अंत में टीचर सिमोन रॉडरीग्ज़ के आने के बाद ही यह समस्या हल हुई. दोनों सिमोन में खूब बनती थी.

फिर अगले छह सालों तक सिमोन के 14 साल के होने तक रॉडरीग्ज़ ने उसे यूरोप के महान दार्शनिकों और चिंतकों के विचारों के बारे में सिखाया. उनमें रूसो भी शामिल थे – जो मुक्ति और समानता में विश्वास रखते थे.

रूसो का यह मानना था कि “जब लोग बच्चे की सुरक्षा के बारे में सोचते हैं तब उन्हें बच्चे को खुद की सुरक्षा स्वंय करने की ट्रेनिंग देनी चाहिए. हमें बच्चों को जिंदा रहने की कुशलताओं से लैंस करना चाहिए - चाहें वो आइसलैंड की कड़क सर्दी हो, या फिर माल्टा की तपती गर्मी.”

यही बात रॉडरीग्ज़ ने सिमोन को समझाई. सामान्य स्कूल की पढ़ाई के साथ-साथ रॉडरीग्ज़ ने सिमोन को लड़ना सिखाया और उसे जंगलों और शहर में जिंदा रहना सिखाया. रॉडरीग्ज़ ने सिमोन को कठिन परिस्थितियों में जीवित रहना सिखाया.

1797 में रॉडरीग्ज़ को वेनेजुअला छोड़ना पड़ा. कारण? उसने एक क्रांतिकारी आन्दोलन में भाग लिया था, जो अंत में फेल हुआ. उस समय वेनेजुअला में कई ऐसे लोग थे जो स्पेन से अपने देश को मुक्त कराना चाहते थे.

पर कुछ सालों बाद दोनों सिमोन दुबारे मिले और उन्होंने मिलकर यूरोप का दौरा किया. यह सिमोन बोलिवर की दूसरी यूरोपीय यात्रा थी. पहली बार वो यूरोप सोलह बरस की उम्र में आया था. तब उसने वहां एक उच्च स्पेनिश अफसर की अट्ठारह साल की बेटी से शादी की थी. वो अपनी पत्नी को वेनेजुअला वापिस लेकर गया. पर दस महीनों में ही उसकी युवा पत्नी का पीले-ज्वर से देहांत हो गया.

उसके बाद सिमोन यूरोप दुबारा लौटा. और इस दूसरी यात्रा ने उसकी ज़िन्दगी बदल दी. सिमोन उस समय पेरिस, फ्रांस में था जब नापोलियन बोनापार्ट को सम्राट का ताज पहनाया जा रहा था. जब सिमोन ने हजारों-लाखों लोगों को ताजपोशी के समय तालियाँ बजाते हुए देखा तो उसे लगा कि इससे बड़ा लोगों का प्यार, किसी को नहीं मिल सकता था. बाद में सिमोन ने कहा, कि उस घटना ने उसे अपने देश की दुखद स्थिति की भी याद दिलाई. उसे लगा अगर कोई व्यक्ति उसके देश को इसी प्रकार मुक्ति दिलाता तो उसे भी वैसी ही वाह-वाही और लोगों का प्रेम मिलता.

बाद में सिमोन और रॉडरीग्ज़ रोम गए. वहां एक पहाड़ी के ऊपर सिमोन बोलिवर ने अपने घुटनों पर बैठकर यह कसम खाई कि वो जब तक अपने देश को स्पेन से मुक्ति नहीं दिलाएगा तब तक वो चैन से नहीं बैठेगा. बोलिवर ने अपना बाकी जीवन उस वादे को पूरा करने में लगाया.

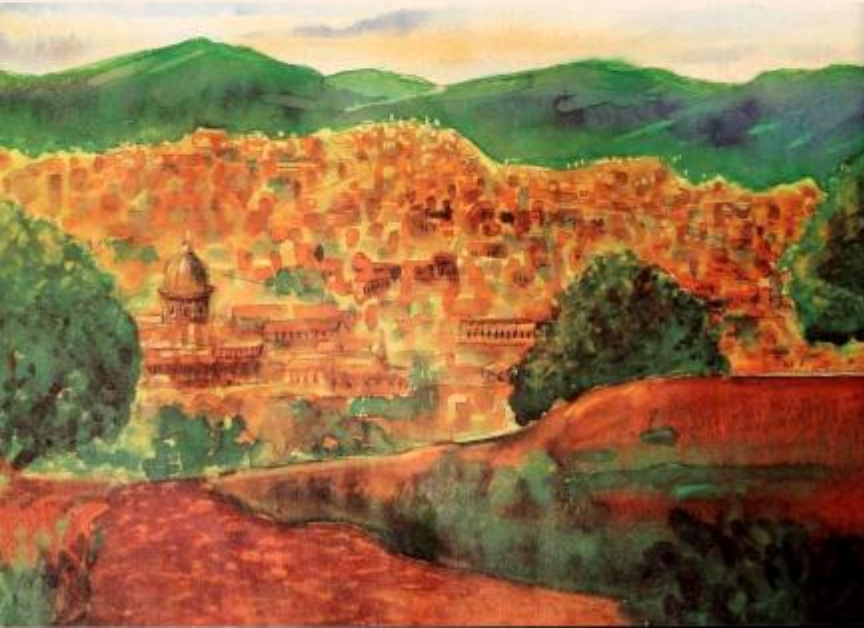

बहुत सालों के संघर्ष और दो क्रांतियों के बाद
सिमोन बोलिवर अपने सपने को साकार कर पाया.

पहला संघर्ष 1819 में शुरू हुआ. बोलिवर ने उस युद्ध में भाग लिया जिसकी अगुवाई जनरल फ्रांसिस्को दी मिरांडा ने की. उस युद्ध में उनकी हार हुई. दूसरी विफल क्रांति का नेतृत्व बोलिवर ने खुद किया. वो लगभग जीत रहा था. पर अंत में ओइर्नोको घाटी के सैनिकों ने – जो स्पेनिश सेना के साथ थे, उसे हरा दिया.

रोम की पहाड़ी पर खाई कसम के पंद्रह साल बाद बोलिवर अब 2100 सैनिकों की फौज का कमांडर था. वो न्यू ग्रानाडा (वर्तमान के कोलंबिया और पनामा) से वेनेजुअला पर आक्रमण कर रहा था. अब उसे दो विफल क्रांतियों का अनुभव था. उसके सामने 7000 स्पेनिश योद्धा थे. अंत में बोलिवर की जीत भी हुई.

दूसरी क्रांति के विफल होने के बाद बोलिवर को अपनी सेना को तैयार करने में पांच साल का समय लगा. इस बार बोलिवर ने न्यू ग्रानाडा के जनरल फ्रांसिस्को पौला सैंटअंडर के साथ हाथ मिलाया. फिर कुछ ब्रिटिश और आयरिश सैनिकों के साथ मिलकर उन्होंने अपने दोनों देशों - न्यू ग्रानाडा और वेनेजुअला को मुक्ति दिलाने का प्रण लिया.

बारिश का मौसम शुरू हुआ था. जब सबसे तेज़ बारिश शुरू हुई तभी बोलिवर की सेना ने कूच किया. न्यू ग्रानाडा में घुसने के लिए तीन सड़कें थीं. बोलिवर ने घुसने के लिए सबसे कठिन सड़क ही क्यों चुनी? क्योंकि दुश्मन सबसे दुर्गम सड़क का उपयोग करने की अपेक्षा उससे कभी नहीं करता. जैसे-जैसे सेना आगे बढ़ी, वैसे-वैसे बोलिवर ने आगे-पीछे जाकर अपने लोगों को प्रोत्साहित किया. उसने बीमार और कमज़ोर लोगों को खुद अपने घोड़े पर बैठाया और फिर उन्हें उफनती नदियाँ पार कराईं.

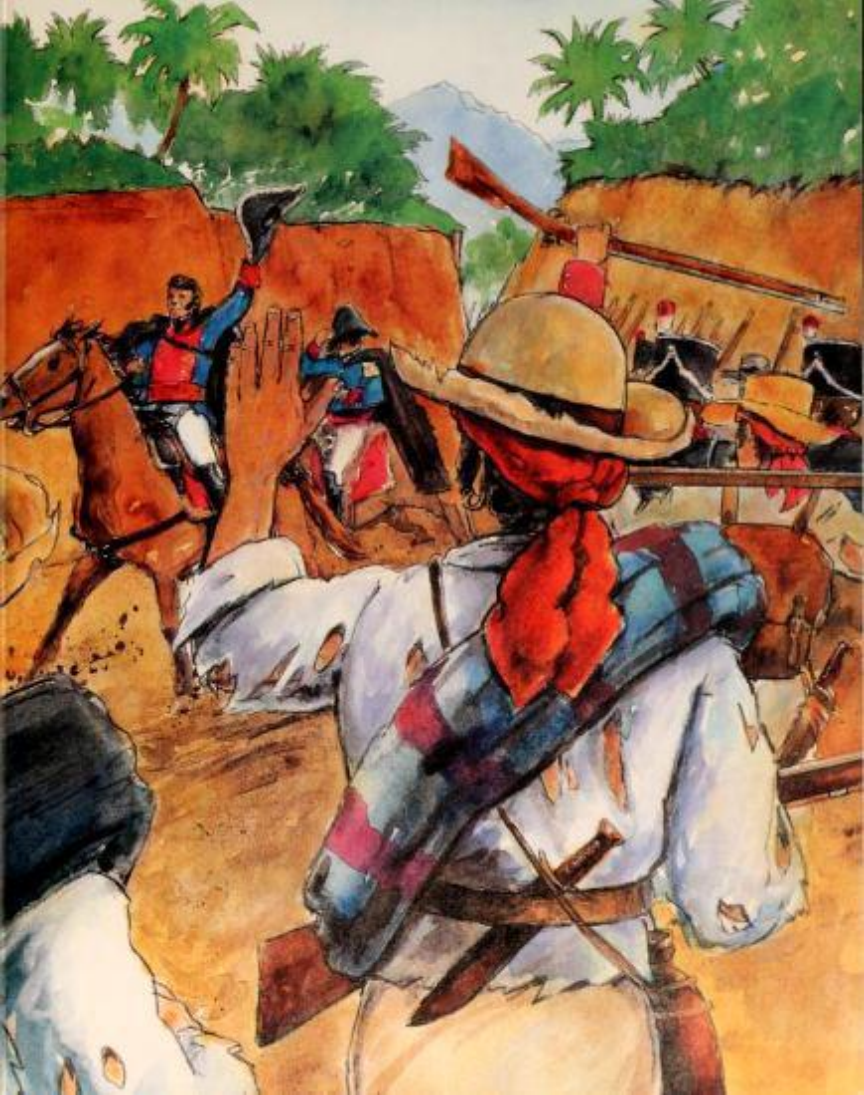

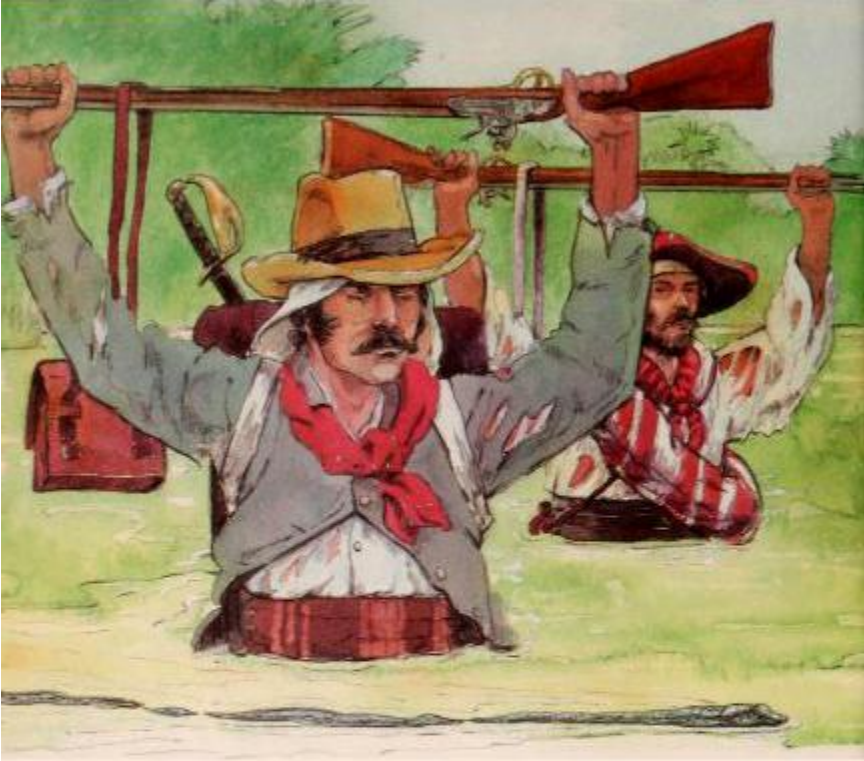

बोलिवर की सेना को कैसनारा में एक हफ्ते तक कमर तक के पानी में चलना पड़ा. अपनी बंदूकों को सूखा रखने के लिए उन्हें अपने सिर के ऊपर उठाकर रखना पड़ा. हर शाम वे पानी से ऊपर उठा कोई टीला या ज़मीन ढूँढ़ते जिससे वो पानी की बजाए गीली मिट्टी में सो सकें.

वहां पर कोई सड़कें नहीं थीं, इसलिए उन्हें घने जंगलों को काटकर आगे का रास्ता बनाना पड़ा. वहां की नदियों पर पुल नहीं थे. इसलिए उन्हें चलते-चलते नदियाँ पार करने के लिए गाय की खाल की नावें बनानी पड़ीं.

बोलिवर की सेना को दुर्गम मैदान पार करने के बाद ऊंची एंडीज पर्वतमाला का सामना करना पड़ा.

उन दुर्गम पहाड़ियों में बोलिवर के अनेकों योद्धा मारे गए. घोड़े पहाड़ियां चढ़ते-चढ़ते लंगड़े हो गए. मैदान से आए सैनिक अपने घोड़ों से बेहद प्यार करते थे. इसलिए वे घोड़ों के साथ अपने-अपने घरों को वापिस चले गए. बहुत से सैनिक सर्दी और तूफानी मौसम में मारे गए. पर उसके बावजूद बोलिवर आगे बढ़ता रहा. वो अपनी फौज को पहाड़ों को पार करके न्यू ग्रानाडा में ले गया.

जब बोलिवर, न्यू ग्रानाडा पहुंचा तब उसकी फौज में कुछ सैकड़े सिपाही ही बचे थे. पर स्पेनिश लोगों को अचरज में डालने की उसकी योजना बेहद सफल रही. जब तक स्पेनिश सिपाहियों को बोलिवर के आने का अंदाज़ हुआ तब तक बहुत देर हो चुकी थी. बोलिवर लड़ाई जीत चुका था.

तीन दिनों बाद बोलिवर की फौज बोगोटा पहुंची. दिसम्बर में सिमोन बोलिवर को रिपब्लिक ऑफ़ कोलंबिया का प्रेसिडेंट नियुक्त किया गया. यह नई रिपब्लिक न्यू ग्रानाडा - वेनेजुअला, क्यूटो और बाद में इक्वेडोर देशों को मिल कर बनी. बस अब एक ही समस्या बची थी – वेनेजुअला और इक्वेडोर को अभी भी मुक्त कराना बाकी था.

जून 1821 में, बोलिवर ने स्पेनिश सेना को काराबोबो के युद्ध में परास्त किया. उसके बाद वेनेजुअला भी मुक्त हुआ. बोलिवर ने जनरल सैंटाअंडर को, वेनेजुअला का प्रमुख नियुक्त किया. बोलिवर ने न्यू ग्रानाडा में भी ऐसा ही किया था. उसके बाद वो इक्वेडोर को मुक्त कराने निकला.

इक्वेडोर में बोलिवर की भेंट अपनी भावी पत्नी मनुएला सैंज से हुई.

1824 में, बोलिवर ने अपनी फौज के कमांडर अंतोनियो होसे सुक्रे की मदद से पेरू को मुक्त कराया. कुछ महीनों बाद सुक्रे ने अपर-पेरू को भी मुक्त कराया. इस नए देश ने बोलिवर के सम्मान में अपना नाम बोलीविया रखा.

बोलिवर अब पेरू, बोलीविया, रिपब्लिक ऑफ़ कोलंबिया (जिसमें न्यू ग्रानाडा, वेनेजुअला, और इक्वेडोर शामिल थे) का प्रेसिडेंट बना. वो हिस्पैनिक-अमेरिकन देशों का एक संघ बनाना चाहता था. 1826 में पनामा में एक सम्मलेन हुआ जिसमें बोलिवर के देशों के साथ-साथ सेंट्रल अमेरिका और मेक्सिको के प्रतिनिधि भी शामिल हुए. यह सम्मलेन पूरी तरह से सफल नहीं हुआ, पर वो अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की शुरुआत ज़रूर थी.

1826 में सिमोन बोलिवर का साम्राज्य बिखरने लगा. वेनेज़ुअला और न्यू ग्रानाडा दोनों, अब साथ-साथ रहना नहीं चाहते थे. उसके बाद गृह युद्ध शुरू हुआ. तब रिपब्लिक ऑफ़ कोलंबिया को बनाए रखने के लिए बोलिवर ने पेरू छोड़ दिया. पर उसमें भी वो सफल नहीं हुआ. जिस तरह से उसने देश पर कब्ज़ा किया उसका लोगों ने घोर विरोध किया. 1928 में सिमोन बोलिवर का बोगोटा, कोलंबिया में क़त्ल हो जाता पर अपनी पत्नी मनुएला सैंज की होशियारी के कारण वो बाल-बाल बच निकला.

मध्य रात में बोलिवर को अपने महल में कुत्तों के भौंकने की आवाजों सुनाई दी. वो उठा और उसने अपनी तलवार और बन्दूक उठाई और दरवाज़े से बाहर जाने के लिए दौड़ा. पर उसकी पत्नी मनुएला ने उसे ऐसा करने से रोका.

अब बाहर से आवाजें आ रही थीं – "तानाशाह को मौत! बोलिवर को मौत!" मनुएला ने ज़मीन से कुछ ऊपर वाली खिड़की को खोलकर बाहर झाँका. फिर उसने बोलिवर को इशारा किया. जैसे ही बोलिवर खिड़की से बाहर कूदा वैसे ही उसके कमरे का दरवाज़ा टूटा और उसमें से हत्यारे अन्दर घुसे. पर तभी मनुएला ने तलवार उठाई और वो हत्यारों की ओर लपकी.

मनुएला के आक्रमण से हत्यारे एकदम घबरा गए. मनुएला ने उन्हें समझाया कि बोलिवर कमरे में नहीं था. वो कहीं बाहर गया था.

अंत में बोलिवर को इस बात का एहसास हुआ कि जिन देशों को उसने मुक्त कराया था, वहीँ पर उसकी जान को खतरा था.

इसलिए मई 1830, में सिमोन बोलिवर ने दक्षिण अमरीका छोड़कर यूरोप जाने का मन बनाया. जब वो यूरोप जाने को था तो उसे बताया गया कि बोगोटा में स्थिति और बिगड़ गई थी. तब बोलिवर ने अपनी यात्रा रद्द की. उसके बाद वो अपने एक प्रशंसक - स्पेनिश रईस के घर रहने लगा.

17 दिसम्बर, 1830 को सिमोन बोलिवर का, टी. बी. से देहांत हुआ.